इकाई–10 अनुवाद

इकाई के रूपरेखा

10.0 उद्देश्य
10.1 प्रस्तावना
10.2 'अनुवाद' शब्द के अर्थ आ ओकर व्याख्या
10.3 अनुवाद के प्रक्रिया (1) : अर्थ ग्रहण
10.3.1 शब्दकोश
10.3.2 वाक्यबोध
10.3.3 रचनाबोध
10.4 अनुवाद के प्रक्रिया (2) : संप्रेषण
10.4.1 शब्द के समतुल्यता के सिद्धांत
10.4.2 श्लिष्ट शब्द
10.4.3 वाक्यगत सावधानी
10.5 अनुवाद करे के व्यावहारिक ज्ञान
10.6 विभिन्न क्षेत्रन में हो रहल अनुवाद
10.7 सारांश
10.8 कुछ उपयोगी पुस्तक के नाम
10.9 बोध प्रश्न/अभ्यास के उत्तर

10.0 उद्देश्य

रउआ भोजपुरी में आधार पाठ्यक्रम के दसवीं इकाई पढ़े जा रहल बानी। एह इकाई में हम रउआ लोग के भोजपुरी अनुवाद के बारे में बताइब।

- एह इकाई के अर्थ जान के ओकर व्याख्या भी कर सकिला;
- अपने अनुवाद के अर्थ जान के ओकर व्याख्या भी कर सकिला;
- शब्दबोध, वाक्यबोध आ रचनाबोध के स्तर पर अर्थग्रहण करे के तौर–तरीका से परिचित हो सकब।
- अनुवाद में सटीक संप्रेषण करेके भी जानब।
- अनुवाद के व्यावहारिक ज्ञान से अवगत होखे के मौका मिली।
- भोजपुरी में नीमन अनुवाद करे के तरीका सीखके अनुवाद के कठिनाई दूर कर सकिला।

10.1 प्रस्तावना

पिछलकी इकाई में हमनी के संक्षेपण, भाव–पल्लवन आ निबंध–लेखन के बारे में जनले हईं जा। एह इकाई में भोजपुरी अनुवाद के सैद्धांतिक आ व्यावहारिक पक्ष पर चर्चा होई। जइसन कि सभे जानता कि प्रत्येक संस्कृति के भाषा में कुछ विशिष्ट अभिव्यक्ति आ खास शब्द होलेसन जवना के दोसरकी भाषा में अनुवाद कइल बड़ी मुश्किल होला। भोजपुरी क्षेत्र के आपन संस्कृति बिआ। एह संस्कृति के मुताबिक एक क्षेत्र के भाषा के अलगे मिजाज बा। एहिसे भोजपुरी से दोसरकी भाषा में आ दोसरकी भाषा से भोजपुरी भाषा में अनुवाद कइल

कबो–कबो कठिन हो जाला। भोजपुरी में अइसन बहुते शब्द बाड़ेसन जवना के सटीक अभिव्यक्ति दोसरकी भाषा में नइखे हो सकत। हमनी के एह इकाई में भोजपुरी के अइसन कुछ शब्द के उदाहरण सहित समझल जाई।

बाकिर इकाई के आरंभ में सबसे पहिले 'अनुवाद' शब्द के अर्थ, प्रकृति आ स्वरूप के समझल जरूरी बा। एकरा बाद अनुवाद के प्रक्रिया पर विचार होई। एहमें कवनो शंका नइखे कि अनुवाद में ध्यान अर्थ पर केन्द्रित रहेला। अनुवाद में मूल भाषा के शब्द आ ओकर रूप बदलल जा सकेला बाकिर अर्थ के बदले के छूट नइखे। एहसे अनुवाद के प्रक्रिया में अर्थग्रहण सबसे जरूरी चीज ह। अर्थग्रहण खातिर मूल भाषा के शब्दबोध, वाक्यबोध आ रचनाबोध के होखल जरूरी बा। तबे रउआ लक्ष्य भाषा में मूल भाषा के आषय संप्रेषित कर सकिला।

बाकिर एगो बात एहिजा कहल जरूरी बा कि अनुवाद के सिर्फ सैद्धांतिक बात जानला से मूल भाषा से लक्ष्य भाषा में अनुवाद ना होई। बढ़िया अनुवाद खातिर व्यावहारिक ज्ञान के होखल जरूरी बा। एहसे एह इकाई में अनुवाद करे के व्यावहारिक ज्ञान दिहल जाई ताकि रउआ भोजपुरी में अनुवाद के कठिनाई दूर कर सकीं। एहिसे एह इकाई में अनुवाद करे के व्यावहारिक ज्ञान के संगे–संगे भोजपुरी में नीमन अनुवाद करे के तरीका भी बतावल गइल बा।

10.2 'अनुवाद' शब्द के अर्थ आ ओकर व्याख्या

'अनुवाद' अत्यंत महत्त्वपूर्ण भाषायी प्रक्रिया ह जवना के मूल में एगो भाषिक –संरचना/अभिव्यक्ति के दोसरकी भाषिक–संरचना/अभिव्यक्ति में रूपान्तरण होला। जइसन कि पहिले बतावल गइल ह कि 'अनुवाद' के शाब्दिक अर्थ होला–केकरो बाद कहल, कवनो कथन के पीछे अनुवर्ती कथन, पुनःकथन भा पुनरुक्ति। वस्तुतः पहिले जवन व्याख्या रूप में पुनःकथन के प्रक्रिया रहे, उहे अनुवाद कहात रहे जवन कि ओही भाषा में कहल जात रहे। आज मूल भाषा से दोसरकी भाषा में विचार, भाव भा आषय के अभिव्यक्त कइल भा रूपान्तरित कइल अनुवाद ह। कहे के मतलब इ बा कि कवनो रचना के ओही भाषा में दोसरकी विधा में प्रस्तुतीकरण भी अनुवाद ह आ एगो भाषा से दोसरकी भाषा में भाषांतरण कइल भी अनुवाद ह। जवना भाषा के रचना के अनुवाद कइल जाला ओकरा के स्रोत भाषा कहल जाला आ जवना भाषा में अनुवाद कइल जाला ऊ लक्ष्य भाषा कहाला। सामान्यतः आज स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में प्रस्तुतीकरण के 'अनुवाद' कहल जाला।

साँच माने में अनुवाद स्रोत भा मूल भाषा से लक्ष्य भाषा में प्रस्तुतीकरण कइल ह। कवनो भाषा में अभिव्यक्त भाव भा विचार के दोसरकी भाषा में प्रस्तुत कइल अनुवाद ह। प्रत्येक शब्द के आपन विशेष अर्थ होला आ ओकर तीव्रता भी होला। एहिसे अनुवाद करत खानि एह बात के विशेष ध्यान रखे के चाहीं कि लक्ष्य भाषा मूल भाषा के तदनुरूप अर्थ व्यक्त करे। कुल मिलाके कहल जा सकेला कि कवनो एगो भाषा के रचना में निहित भाव आ विचार के तदनुरूप सन्निकट अभिव्यक्ति के रूप में दोसरकी भाषा में संवहन कइल अनुवाद ह।

10.3 अनुवाद के प्रक्रिया (1) : अर्थग्रहण

कहल जाला कि अनुवादक लेखक के दुनिया के फिर से जिएला। एहसे अनुवाद के प्रक्रिया में दूगो सर्जनात्मक शक्ति मिलके काम करेलीस– एगो लेखक के आ दोसरकी अनुवादक के। साँच माने में ईमानदारी से अनुवाद कइल सृजन के तुलना में अधिक जटिल, कोमल आ दायित्वपूर्ण काम होला काहे कि अनूदित कृति दूगो साहित्यकारन के कृति होले। एहिले जॉन ऐहम साहब कहले बानी कि अनुवाद करे के प्रयास अइसन प्रतिभा के ना करे के चाहीं जवन कि मूल लेखक के प्रतिभा से निचला स्तर के होखे। कुछ लोग के त मत ई बा कि उत्कृष्ट सृजनात्मक योग्यता के संगे ईमानदारीपूर्वक कइल अनुवाद मूल से भी कहीं अधिका उच्च साहित्यिक श्रेणी के नमूना बन सकेला। एहिसे ई भी बात कहल जाला कि अनुवाद–प्रकिया में मूल कृति के सुस्पष्ट शैली आ अनुवादक के आपन युग के आधुनिक शैली के बीच एगो तनाव बनल रहेला। असाधारण विरोधाभास के जरिए अनुवाद में जवन 'आत्म' के लोप होला, ऊ स्वयं आत्माभिव्यक्ति के माध्यम बन जाला। एहिसे अनुवादक लेखक के खोज में सबसे पहिले ऊ कवनो दोसर व्यक्ति में लेखक के पावेला आ फिर खुद अपना में। ध्यान देबे के बात इ बा कि कवनो भाषा में सिर्फ अर्थ भर ना होखे–बल्कि ओकरा में सक्रिय अर्थ भी होखेला। शब्द में अर्थ के मात्रा जतना आवेला, ओकरा बीच में आ आसपास में, ओकरा से कुछ अधिके होखेला। एहसे शब्द के फाँक से अर्थ के बिना पकड़ले– उतरले अनुवाद परिपूर्ण आ प्रभावी ना हो सकेला। अनुवाद में संदर्भगत अर्थ महत्वपूर्ण होखेला। एह संदर्भगत अर्थ के पता लगावे खातिर भाषा के स्थानिक विशेषता जानल जरूरी होला आ सांस्कृतिक संदर्भ पर भी ध्यान राखल जरूरी बा। कुल मिलाके कहल जा सकेला कि अनुवाद एगो समझौता ह। इ समझौता तबे सफल होई जब ओकरा पीछे एगो व्यवस्थित विधि के आधार होखे। एकरा के 'वैज्ञानिक–विवृत्ति' कहल जाला। अनुवाद–प्रक्रिया के पाँच गो सोपान होला–

क) स्रोत आ लक्ष्य भाषा के ज्ञान

ख) पाठ के विषय के पूरा परिचय

ग) विश्लेषण

घ) प्रतिस्थापन

ड.) अनुवाद के सहायता से पाठ के संरचनात्मक पुनर्निर्माण

अब हमनी का अनुवाद के स्वरूप आ प्रक्रिया पर मिला–जुलाके विचार कर चुकल बानी जवना से निष्कर्ष इ निकलल ह कि एगो भाषा में प्रकट कइल भाव–विचार के ज्यों–के–त्यों दोसरकी भाषा में प्रस्तुत कइल अनुवाद ह। एहमें दूगो बात महत्वपूर्ण बाड़ीसन। पहिलकी इ कि मूल भाषा (जवना भाषा से अनुवाद करे के बा) के अर्थ ग्रहण आ दोसरकी इ कि लक्ष्य भाषा (जवना भाषा में अनुवाद करे के बा) में ओकर सही संप्रेषण। अब हमनी के अर्थग्रहण पर विचार कइल जाई। रउआ अर्थग्रहण से मूल रचना के अर्थ समझ सकिले।

अनुवाद–कार्य में अनुवादक के दोहरी मानसिकता के दबाव झेले के पड़ेला। पहिले त ऊ मूल भाषा के वाक्य के पढ़के, ओकरा में प्रयुक्त शब्दक्रम के अनुसरण करत ओह वाक्य के अर्थ ग्रहण करेला आ फिर ओकरा के लक्ष्य भाषा के वाक्य–योजना के अनुरूप शब्दक्रम

के माध्यम से व्यक्त करेला। पहिलका अर्थग्रहण ह आ दोसरका संप्रेषण ह। कबो–कबो देखल जाला कि बड़हन आ मिश्र वाक्य के अनुवाद में शब्द के सटीक रहलो पर मूल वाक्य के अर्थ आ भाव लक्ष्य वाक्य में व्यक्त ना हो पावे। इ देखल जाला कि जटिल आ सूक्ष्म विचार के प्रायः अभिव्यक्ति लमहर आ मिश्र वाक्य में होले। एहसे अइसन वाक्य में सही अर्थग्रहण आ लक्ष्य भाषा में ओकर पुनरभिव्यक्ति बहुत जरूरी बिआ। निष्कर्ष ई भइल कि अनुवाद में मूल भाषा के अर्थग्रहण आ लक्ष्य भाषा में ओकर संप्रेषण सर्वाधिक महत्व के चीज बिआ। अर्थग्रहण खातिर अनुवादक में मूल भाषा के शब्दबोध, वाक्यबोध आ रचनाबोध के होखल जरूरी बा।

10.3.1 शब्दकोष

सर्जनात्मक साहित्य में शब्द सगरे अपना रूढ अर्थ में प्रयुक्त ना होलेसन। शब्द के तीनू शक्ति–अभिधा, लक्षणा आ व्यंजना शक्ति–से हमनी के पूर्णतः परिचित बानी जा। कविता में लाक्षणिक आ व्यंजक शब्द के खूब प्रयोग होला। जइसन कि हमनीके जानत बानी जा कि शब्द में अभिधेयार्थ के अलावे कई गो भिन्न अर्थछवि भी होले। शब्द में एक अर्थ–छवि के आगमन कवनो क्षेत्र विषेष के सांस्कृतिक परंपरा, इतिहास, भूगोल, अर्थव्यवस्था, समाज–संगठन आदि के कारण होला। परिणामस्वरूप अइसन शब्द के लक्ष्य भाषा में सटीक पर्याय दुर्लभ हो जाला। भोजपुरी 'घइला' खातिर अंग्रेजी में 'पिचर' शब्द चलेला। अंग्रेजी 'घइला' के 'वाटर पॉट' आ 'मिल्क पॉट' के रूप में विषेषीकृत भी करेले। 'वाटर पॉट' के तो भोजपुरी अनुवाद 'गगरी' (घइला के संदर्भ में) ठीक बा बाकिर 'मिल्क पॉट' खातिर 'बेहुँड़ी' एकदम सटीक नइखे। कारण कि 'बेहुँड़ी' दूध, दही आ मट्ठा एह तीनों के मिलल–जुलल बरतन ह। एकरा में दूध उबालल जाला, दही जमावल जाला आ मट्ठा भी मथल जाला। अतने ना, आकार–प्रकार आ रूप के हिसाब से भोजपुरी शब्दकोष के 'घइला' बड़ा धनाठ (समृद्ध) शब्द ह। भोजपुरी में सबसे बड़का घइला के 'छोंड़ी' कहल जाला। एहमें अन्न–चाउर राखल जाला। ओकरा से छोट घइला के 'चरूई' कहल जाला। 'चरूई' से छोट 'हाँड़ी', 'हाँड़ी' से छोट 'मेटा', 'मेटा' से छोट 'नादी' आ 'नादी' से छोट 'कटिया' होले। एकरो से छोट चुक्का, चुकड़ी आ टुंइया अलगे बा। अब एकर अनुवाद हिंदी आ अंग्रेजी में कइसे होई? यदि होइबो करी तो भोजपुरी वाला पैनापन जरूर भोथर हो जाई। अइसहीं 'लउर' पोरसा आ पोरसा से बड़ होला। 'लउर' से बड़ 'लाठा' होला। 'लाठी' तो 'लउर' से छोट होले। एकर प्रामाणिक ऊँचाई टीकासन ह। छाती भर के 'सोटा' होला। 'सोटा' से मिलत–जुलत ऊँचाई 'ठेंघुरी' के ह। बाकिर 'सोटा' मोट होला आ 'ठेंघुरी' ओकरा से पातर होले।

हिंदी में 'डंडा' एह सभन के सटीक पर्याय ना हो सकेला। शायद इहे कारण बा कि हिंदी के 'लाठी' शब्द के अंग्रेजी अपना शब्दकोष में शामिल कर लेले बिआ। अंग्रेजी में ग्रुप, टीम, बंच, बंडल, हर्ड, कलस्टर जइसन समूहवाची शब्द बाड़ेसन। भोजपुरी में भी अइसन अलग–अलग संदर्भ युक्त समूहवाची शब्दन के कमी नइखे। भोजपुरी में पुअरा के गाँज होला, धान के ढेरी होले, ईंटा के खेवाल होला, माटी के थाहुर होला, केला के घवद होला, सतपुतिया के झोंप होला आ चाभी के झोंप होला। एहसे ई जरूरी बा कि अनुवादक शब्दन के सटीक अर्थग्रहण करके ओकरा के लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्त करे नाहीं त अर्थ के अनर्थ हो जाई।

10.3.2 वाक्यबोध

मूल भाषा के वाक्य–योजना के प्रभाव लक्ष्य भाषा पर पड़ेला एकरा नासमझी से मूल विचार अस्पष्ट भा भ्रांतिपूर्ण हो जाले आ अनुवाद के स्वरूप बिगड़ जाला । एकरा खातिर यदि मूल वाक्य के कुछ व्याकरणिक कोटि के छोड़े के पड़े त छोड़ देबे के चाहीं। अइसहीं लक्ष्य भाषा में भी कुछ व्याकरणिक कोटि जोड़े के चाहीं। एकरा में कवनो हर्ज नइखे। उदाहरण खातिर अंग्रेजी वाक्य में प्रयुक्त ए ऐन, दि आदि आर्टिकल्स के लिहल जा सकेला। हिंदी में एकर प्रचलन नइखे। अइसहीं मूल भाषा के अनेक कारक–चिह्न के लक्ष्य भाषा में या तो छोड़ दिहल जाला आ दोसरा कारक–चिह्न में बदल दिहल जाला। भोजपुरी में हिंदी लेखा 'ने' चिह्न ना होला। निपातन के बारे में भी अइसन बात कहल जा सकेला। आजकल त भोजपुरी में 'ही' आ 'भी' के प्रचलन हो गइल बा। पहिले एकर रूप शब्द के संगे सटके चलत रहे। आजो एकर प्रचलन बंद नइखे भइल। मिसाल के तौर पर, राम भी जाएगा (रामो जइहन)/राम ही गया (रामे गइलन) आदि। भोजपुरी में अधिकरण के चिह्न 'में' भी संस्कृत लेखा शब्द में कबो–कबो घुल–मिलके रहेला, जइसे उनका घर में कुछ नहीं है (उनुकरा घरे कुछो नइखे) आदि।

स्वर के भोजपुरी में कहीं–कहीं विलंबित दीर्घकालिक उच्चारण कइल जाला। एह भाषाके बोले के लहजा दोसरकी भाषा सभ से अलग बा। यदि अनुवादक का भोजपुरी के उच्चारण–पद्धति के जानकारी ना होखे त अनुवाद में अर्थ के अनर्थ हो जाई। उदाहरणार्थ –

हम डेरा गइनी (हम डेरा पर गये)।

हम डेरा गइनी (हम डेर गये)।

हम डेरा ऽ गइनी (हम डर गये)।

उदाहरण से स्पष्ट हो जात बा कि भोजपुरी में उच्चारण–पद्धति के कुछ खास विषेषता बा। पहिला वाक्य में 'डेरा' के विलंबित उच्चारण नइखे होत, एहसे ओहिजा अर्थ 'पड़ाव' हो जात बा जबकि दूसरका वाक्य में 'डेरा' के विलंबित उच्चारण हो रहल बा, एहसे ओहिजा अर्थ बदलके 'डेराइल' (डरना) हो गइल बा। भोजपुरी के आपन भंगिमा या कहीं शब्द–वक्रता बिआ। यदि रउआ कहब कि हमार मेहरारू महलिया में बाड़ी, तब त ठीक बा। बाकिर यदि ई कह देब कि हमार मेहरारू महलवा में गइल बाड़ी त एकर अर्थ बदल जाई आ राउर मेहरारू घर छोड़के टोला–मुहल्ला में चल जइहन। भोजपुरी में मेहरारू के केष (बाल) देखके रउआ 'बाल रे बाल' ना कह सकिला। 'बाल रे बाल' तब कहल जाला, जब कवनो चीज के संख्या भा मात्रा देखके आष्चर्य होखे। एहसे अनुवादक में मूल भाषा के वाक्य बोध के होखल जरूरी होला। वाक्यबोध में वाक्य के रूप आ ओकर रचना–विधान भी शामिल बा।

अनुवादक के स्रोत भाषा के रूप आउर रचना–विधान के जानकार होखल जरूरी बा। रूप आ रचना–विधान के तात्पर्य एहिजा लिंग, वचन, कारक सहित समास आ शब्द–रचना के अच्छा ज्ञान से बा।

लिंग–विधान अलग–अलग भाषा में अलग–अलग प्रकार से होला। मराठी में संस्कृत लेखा तीन गो लिंग बा जबकि भोजपुरी में हिंदी लेखा दू गो लिंग बा। शब्दन के लिंग भाषा

के प्रकृति के अनुसार बदल भी जाला। मराठी के कई गो पुलिंग शब्द हिंदी में स्त्रीलिंग बाड़ेसन, जइसे – पुलिस, अग्नि, सरकार, आत्मा आदि। भोजपुरी में भी अगिन (अग्नि) देवी ना, देवता हवें। एहिजा भोजपुरी के लिंग विधान मराठी लेखा बा। बाकिर अधिकांश में ऊ हिंदी लेखा बा। एकर अपवादो बा। केहू भोजपुरी 'हाथी' के अनुवाद हिंदी में 'हाथी' करे त गलत हो जाई। कारण कि भोजपुरी में 'हाथी' के पुलिंग 'हाथा' होला। एहसे भोजपुरी में 'हाथी' के अनुवाद 'हथिनी' होई। 'हथिनी' भोजपुरी में कहीं चलेला आ कहीं ना चले। हिंदी में 'सही' शब्द मूलतः विशेषण ह जवना के अर्थ शुद्ध भा ठीक होला। हस्ताक्षरवाला अर्थ भी हिंदी शब्दकोष में आ गइल बा। बाकिर गुजराती में 'सही' के अर्थ 'हस्ताक्षर' होला। ई भोजपुरी में भी बा जवन कि स्त्रीलिंग शब्द ह। हिंदी आ भोजपुरी दूनों में 'टिकुली' (बिंदी) स्त्रीलिंग शब्द ह बाकिर भोजपुरी लेखा हिन्दी में 'टिकुला' (बड़ी बिंदी) ना चले जवन कि भोजपुरी में पुलिंग शब्द ह। अइसन ऊनार्थक शब्दन के पुलिंग रूप भोजपुरी में खूब मिली, मुंड (मुड़ी), रोट (रोटी), लाठा (लाठी) आदि। हिंदी में केश (बाल) पुलिंग ह बाकिर भोजपुरी में 'केश' (बाल) स्त्रीलिंग ह जबकि भोजपुरी (बिहारी) में ई शब्द पुलिंग भी होला। जइसे 'हमार माथ के करियका केश बड़का–बड़का गो भइल बा।' उदाहरणार्थ, हमहूँ झारबि लामी केश। हिन्दी के 'बाल' भोजपुरी में ना चले, एकरा, बदला में 'बार' (बाल) चलेला। भोजपुरी के आपन 'बाल' शब्द के अर्थ अलग बा जवना के माने अनाज के डंठल के आगे के ऊ हिस्सा होला जवना में दाना लागल रहेला।

10.3.3 रचनाबोध

जइसन कि हमनी के देखनी कि अनुवाद में शब्दबोध आ वाक्यबोध के होखल जरूरी बा। बाकिर कुल मिलाके अनुवादक का रचना के अनुवाद करे के होला। शब्द भा वाक्य का अनुवाद के उद्देश्य भी रचना के अनुवादे होला। एहसे इ जरूरी बा कि अनुवादक के अनुवादित कइल जा रहल रचना के अच्छा ज्ञान होखे। अनुवादक के पूरी रचना के अर्थ ठीक से मालूम होखे के चाहीं। एहसे सफल अनुवाद खातिर रचनाबोध जरूरी चीज बा।

10.4 अनुवाद के प्रक्रिया (2) संप्रेषण

जइसन कि पहिले बतावल गइल ह कि अनुवाद के प्रक्रिया के दोसरका चरण 'संप्रेषण' ह। एकरा में मूल भाषा के समझल बात के लक्ष्य भाषा में कहल जाला। एकरा खातिर मूल भाषा में प्रयुक्त शब्दन आ समान अर्थ रखेवाला शब्द के लक्ष्य भाषा में खोजल जाला। एकरा के समतुल्यता कहल जाला।

10.4.1 शब्द के समतुल्यता के सिद्धांत

भोजपुरी से हिंदी भा अंग्रेजी में अनुवाद करत खानि सबसे पहिले हमनी के शब्दकोष में से ओह शब्द के 'प्रति षब्द' खोजीले। एकरा में दूगो कठिनाई आवेले। पहिलकी कठिनाई त ई आवेला कि अकसरहाँ एगो शब्द के कई गो प्रतिषब्द मिलेला। एकरामें से एगो सही प्रतिशब्द के चुनाव एगो सफल अनुवादके कर सकेला; जइसे हिंदी के अग्रभाग खातिर भोजपुरी में तीन गो शब्द बाड़ेसन टेम्ही, टूँड़ आ खोंघ। एकरामें से रउआ दीया के बाती के अग्रभाग के टूँड़ ना कह सकिने। एकरा के 'टेम्ही' कह सकिने । ओइसही रउआ जौ के बाल

के रोआँ के 'टेम्ही' ना कह सकिला। एकरा खातिर भोजपुरी के सटीक प्रतिषब्द 'टूँड़' होई। ठीक अइसहीं सूई के 'खोंघ' होला, 'टूँड़' ना होखे। अनुवादक के सामने प्रतिषब्दन के चयन एगो चुनौतीपूर्ण काम बन के खड़ा हो जाला।श

शब्द के अनुवाद में दोसर की कठिनाई सटीक पर्याय के लेके बा। एकर कारण ह कि एक भाषा में प्रयुक्त कई गो शब्द के सटीक पर्याय दोसरकी भाषा में ना मिलेला। इहे कारण रहे कि ग्रियर्सन साहब के 'गिलावा' खातिर 'Moistend day used as mortrar', 'सुरखी' खातिर 'The pounded bricks used as a substitute for sand' आ 'बड़ेरी' खातिर 'Ridge pole' शब्द के व्यवहार करे के पड़ल रहे। कुल मिलाके कहल जा सकेला कि अनुवाद में समतुल्यता के सिद्धांत अपनावल जाला। एहिसे मूल भाषा में प्रयुक्त शब्द के लक्ष्य भाषा में सर्वाधिक निकटवर्ती पर्याय खोजल जाला।

10.4.2 श्लिष्ट शब्द

श्लिष्ट शब्द के माने अनेकार्थक शब्द होला। भोजपुरी में ष्लिष्ट शब्दन के कमी नइखे; जइसे डोंड़, आन, कोठ आदि। 'डोंड़' के पहिलका अर्थ पानी में रहेवाला एगो साँप होला, दूसरका अर्थ होला जवना में पइसा–कौंड़ी राखल जाला आ तिसरका अर्थ लकीर होला। 'जमीन पर डोंड़ खींच एकरा जइसन वाक्य ई बता रहल बा कि एहिजा 'डोंड़' के अर्थ 'लकीर' होई। एहसे एहिजा लक्ष्य भाषा में लकीर के प्रतिषब्द राखे के होई। साँप भा बटुआ के प्रतिषब्द रखला पर अनुवाद गड़बड़ हो जाई। अइसहीं बाँस के कोठ होला। भोजपुरी में बाँस के मंडलाकार समूह के कोठ कहल जाला। बाकिर एकर प्रयोग विशेषण के रूप में भी होला; जइसे खट्टा आम खइला से हमारा दाँत कोठ हो गइल। एहिजा कोठ के तात्पर्य खटास से दाँत के कुंठित भइल होखेला। एहसे अनुवाद के श्लिष्ट शब्द के अनुवाद में विशेष चौंकस रहे के जरूरत बा।

10.4.3 वाक्यगत सावधानी

जइसन कि हमनी के जानत बानी सन कि दूगो अलग–अलग भाषा के वाक्य–रचना एक लेखा ना होखे। यदि अंग्रेजी वाक्य में प्रयुक्त शब्द–क्रम के हिसाब से भोजपुरी में वाक्य बनाइब त अकसरहाँ गलत वाक्य बन जाई। ई बात हिदी के प्रसंग में भी कहल जा सकेला; जइसे– 'राम के पूरा शरीर में घाव हुआ है'। एकर भोजपुरी अनुवाद 'राम के सउँसे देही घाव भइल बा' होई। एहिजा हमनी के देखत बानी कि हिंदी 'में' चिह्न भोजपुरी में हट गइल बा। 'देह' भी हिंदी में चलेला बाकिर भोजपुरी में 'देह' के बदला में शरीर कर देबत भोजपुरी के धार मंद – कुंद हो जाई। कुल मिलाके कहल जा सकेला कि 'शब्द' खातिर 'प्रतिशब्द' के तलाश आ 'वाक्य खातिर' प्रतिवाक्य बनावे के कोशिश 'रचना' के स्थान पर 'प्रतिरचना' बनाबे खातिर होला। कहवाँ कोशगत अर्थ से भिन्न अर्थ लगावल जाय, कहवाँ शब्द के क्रम तोड़ल जाय, कहवाँ ढेरमनी वाक्यन के जोड़ि के एगो वाक्य गठित कइल जाय, ई सभ बात अनुवादक के अनुभव, भाषा–ज्ञान, प्रतिभा आ समझदारी पर निर्भर करेला।

10.5 अनुवाद करे के व्यावहारिक ज्ञान

अब तक रउआ सभे अनुवाद के सैद्धांतिक पक्ष के समझनीं। सिद्धांत कवनो काम के शुरू करे खातिर आवश्यक ह बाकिर सैद्धांतिक ज्ञान के सार्थकता एह बात में बा कि ओकरा के व्यवहार में लिहल जाय। एहिजा अनुवाद करे के सीख रहल बानी जा। जब तक रउआ खुद अनुवाद के समस्यन से जूझब ना, तब तक रउआ सफल अनुवादक ना बन सकिला। हम नीचे हिंदी से भोजपुरी में, भोजपुरी से अंग्रेजी में अनूदित कुछ नमूना दे रहल बानी। रउआ एकरा के पढ़ीं आ समझीं।

- वह एक पेड़ था। इमली का पेड़। खूब घना, खूब पुराना। थोड़ी–सी हवा बही नहीं कि वह झूमने लगता था। जब झूमता था, गाँव झूम जाता था। वह चुप रहता था, गाँव चुप रहता था। जब सोता था, गाँव सो जाता था। वह गाँव के पश्चिम तरफ था या उसके पूरब तरफ गाँव था। वहाँ एक पेड़ था, उस पर चिड़ियों के ढेर सारे घोंसले थे। उसके कोटरों में उल्लू बसते थे और यदि उर्दू नज्म की यह बात सही है कि 'खाके गुलिस्ता करने को एक ही उल्लू काफी है' तो वहाँ इतने उल्लू थे कि पूरा देष खाक कर सकते थे। ('इमलिया' कहानी से उद्धृत)।

गाँव के पछिमाहुत एगो खूब पुरनकट्ट आ झामाठ इमली के पेड़ रहे। ओह इमली के पेड़ में गाँव के प्राण बसत रहे। एहिसे ऊ गाँव ओह इमली के नींद सूतत–जागत रहे। ओकरा हवा में झूले से सउँसे गाँव झूमत रहे आ ओकरा चुप रहला पर सउँसे गाँव चुप रहत रहे। ई इमली के लमहर डाल–डेहुँगी पर चिरईन के खोंता रहे। ओकरा खोढ़रा में उलुअन के बास रहे। बाकिर इ उल्लू ओइसन उल्लू ना रहलेसन जवन कि एगो उर्दू नज्म में टाँकल बा– 'खाके गुलिस्तां करने को एक ही उल्लू काफी है' नाहीं त ओहिजा अतना उल्लू रहलेसन कि सारा देश खाक हो सकत रहे। (भोजपुरी भाषांतर)

व्याकरण भाषा के शास्त्र ह, अनुषासन ह। एकर जनम भाषा के बाद होला। मतलब ई कि भाषा पहिले जनमेला बाकिर ओकर व्याकरण आ शब्दकोष बाद में लिखाला। एह अर्थ में व्याकरण चाहे शब्दकोष भाषा के पिछलग्गू बाड़े सन। बाकिर व्याकरण भा शब्दकोष लिखइला के बाद भाषा ओकर पिछलग्गू हो जाले। पिछलग्गू के मतलब एकदम अंधानुयायी ना, काहे कि भाषा कबो के पोसुआ जीव ना ह। ('भोजपुरी व्याकरण, शब्दकोश आ अनुवाद के समस्या' से उद्धृत)

Grammar is virtually a code of conduct to discipline the language. It comes into existence following the genesis of the language. It means that the language comes into being prior to grammar and dictionary. In another word, grammar and dictionary are the followers of language. But the practice turns vice-verse after the grammar and dictionary come into print. The followers here does not means the blind supporter of the system because it is never a parasite to grammar. (अंग्रेजी भाषांतर)

ऊपर के दिहल गइल भाषांतर के नमूना से ई बात साफ हो रहल बिआ कि अनुवाद करत खानि अनूदित भाषा के प्रकृति के रक्षा कइल अनुवादक के पहिलका दायित्व ह।

पहिलका नमूना देख सकिला कि हिंदी में पश्चिम तरफ' भोजपुरी भाषांतर में एकदम आरंभ में चल आइल बा। वा भोजपुरी के 'लहसत डाल डहुँगी' वाक्य–खंडभाव के स्पष्ट करे खातिर भोजपुरी भाषांतर में चल आइल जबकि एकर अता–पता मूल में नइखे। ई सभ परिवर्तन भाव आ आशय के कारण हो गइल बा। अंग्रेजी रूपांतरण में रउआ देख रहल बानी कि भोजपुरी वाक्य व्याकरण भाषा के शास्त्र ह, अनुशासन ह खातिर अंग्रेजी में 'Grammar is virtually a code of conduct to discipline the language' वाक्य आ गइल बा। एकर कारण ई बा कि कारक–चिह्न या परसर्गन के प्रयोग अंग्रेजी आ भोजपुरी में अलग–अलग तरीका से होला। अनुवाद करत खानि शब्द के सही आ प्रसंगानुसार अनुवाद करे के चाहीं; जइसे पहिलका नमूना में 'खूब घना' पेड़ खातिर 'झामाठ' शब्द आइल बा जबकि 'घना' शब्द भोजपुरिओ में चलेला। बाकिर भोजपुरी में बिअड़ी 'धन' जामेला जबकि पेड़ 'झामाठ' होला। एहसे ई परिवर्तन कर दिहल गइल बा। 'झामाठ' के पर्यायवाची शब्द 'झमेठगर' भी होला। अनुवादक कवन शब्द के प्रयोग करी, एकरा खातिर ऊ स्वतंत्र बा। जइसन कि पहिले बतावल गइल ह कि स्रोत भाषा के बात लक्ष्य भाषा में जइसन के तइसन प्रस्तुत कइल अनुवाद के लक्ष्य ह।

10:6 विभिन्न क्षेत्र में हो रहल अनुवाद

आज दुनिया में अनुवाद के क्षेत्र बहुत व्यापक हो गइल बा। विभिन्न क्षेत्रन से तात्पर्य विज्ञान, मानविकी, समाजविज्ञान, सरकारी कार्यालयन में हो रहल अनुवाद से बा। एकरा अलावे साहित्यिक अनुवाद आ स्वतंत्र अनुवाद भी हो रहल बा। भूमंडलीकरण के एह दौर में वैश्विक–संवाद के अनिवार्यता बढ़ल जात बिआ। दुनिया के सभ देश एक–दोसरा से संवाद स्थापित कइल चाहत बा आ दोसरकी भाषा सभ में लिखल साहित्य, विज्ञान, समाजविज्ञान, दर्शन आदि के उत्कृष्ट पुस्तकन के पढ़ल चाहत बा। अइसन में अनुवाद विद्या के महत्व स्वतः बढ़ गइल बिआ। हिंदी में अज्ञेय, विश्व कवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर रचित 'गोरा' (बंगला उपन्यास) के अनुवाद कइले बानी। लियो टॉलसतोए के आ चेखव के रसियन कहानियन के अनुवाद भीष्म सहनी कइले बानी। उमर खय्याम के रूबाइयन के अनुवाद बच्चन जी कइले बानी। भोजपुरी भी पीछे नइखे। एकरो में अंग्रेजी कवियन में कईगो कवि, यथा – शेक्सपियर, वर्डसवर्थ, कीट्स, टी.एस. इलियट, डबलू.बी.इट्स आदि के कवितन के अनुवाद भइल बा।

10:7 सारांश

हम इ मानके चलत बानी कि रउआ सभ एह इकाई के ध्यान से पढ़ले होखब। एहसे रउआ लोग के अनुवाद के विविध पक्ष के भरपूर जानकारी हो गइल होई।

अब रउआ एह बात के स्पष्ट कर सकिने कि अनुवाद एगो अइसन प्रक्रिया ह जवना में एक भाषा के बात दोसरा भाषा में कइल जाले।

अनुवाद करत समय अनुवादक दूगो प्रक्रिया से गुजरेला – पहिलका अर्थग्रहण आ दोसरका संप्रेषण।

अर्थग्रहण में स्रोत भाषा के बात समझल जाले आ संप्रेषण में दोसरा तक पहुंचावे खातिर लक्ष्य भाषा में उहे समझल बात कहल जाले।

एह इकाई में हम रउआ सभके सुविधा खातिर भाषांतरण के कुछ नमूना देले बानी। एहसे रउआ के सैद्धांतिक ज्ञान के संगे–संगे व्यावहारिक ज्ञान भी प्राप्त होई।

अंत में विभिन्न क्षेत्र में हो रहल अनुवाद के चर्चा कइल गइल बा जवना से रउआ सभके अनुवाद के एगो समग्र विधि के संगे–संगे निष्चित दृष्टि भी प्राप्त होई।

बोध प्रश्न

1. नीचे दिहल कथन में से कवनो सही आ कवनो गलत बा। सही कथन के सामने (√) आ गलत कथन के सामने (×) के चिह्न लगाईं।

क) 'अनुवाद' शब्द के अर्थ होला 'अनुवचन'। ( )

ख) जवना भाषा से अनुवाद कइल जाल, ओकरा के 'लक्ष्य' भाषा कहल जाला। ( )

ग) जवना भाषा में अनुवाद कइल जाला, ओकरा के 'स्रोत भाषा' कहल जाला। ( )

घ) मूल भाषा के स्रोत भाषा भी कहल जाला। ( )

2. खाली स्थान के उपयुक्त शब्द से भरीं।

क) ..... लेखक का दुनिया के फिर से जिएला ? (कवि/अनुवादक)

ख) रउआ.....से मूल रचना के अर्थ समझ सकिला। (अर्थग्रहण/संप्रेषण)

ग) .....में वाक्य के रूप आ ओकर रचना–विधान भी शामिल बा। (षब्दबोध/वाक्यबोध)

घ) अगर 'पानी' चढ़ावे के बा त ..... में जाए के होई। (मंदिर/खेत)

3. नीचे लिखल शब्द के छोट से बड़ आकार के क्रम में सजाईं

क) मेटा ख) कँटिया ग) हाँड़ी घ) छोंड़ी

4. 'शब्द के समतुल्यता के सिद्धांत' से रउआ का समझत बानी? पाँच पंक्ति में उत्तर दीहीं।

5. श्लिष्ट शब्द के माने दू पंक्ति में स्पष्ट करीं।

अभ्यास

1. रउआ सामने हिंदी के कुछ वाक्य रखल जा रहल बा। रउआ एकर अनुवाद भोजपुरी में करी।

क) मुझे सबेरे जाना है।

ख) आप कहाँ रहते हैं?

ग) वह घर जा रही है।

घ) बिहार में मैथिली बोली जाती है।

2. रउआ नीचे लिखल अंग्रेजी के वाक्य के भोजपुरी में अनुवाद करीं।

क) He is reading.

ख) How are you?

ग) What is your name?

घ) She goes.

3. नीचे भोजपुरी के कुछ वाक्य दिहल जा रहल बा। रउआ एकर अनुवाद हिंदी में करीं।

क) इ अनुवाद नीमन बा

ख) रउआ कहाँ जात बानी?

ग) कहवाँ जइबू?

घ) खाके अँचवल जाई।

10.8 कुछ उपयोगी पुस्तक के नाम

1. अनुवाद विज्ञान, डॉ. भोलानाथ तिवारी, शब्दकार प्रकाषन, दिल्ली

2. भोजपुरी व्याकरण, शब्दकोष आ अनुवाद के समस्या, डॉ. राजेन्द्रप्रसाद सिंह, नई दिल्ली।

10.9 बोध–प्रश्न/अभ्यास के उत्तर

1. क) (√) ख) (×) ग) (×) घ) (√)

2. क) अनुवादक, ख) अर्थग्रहण, ग) वाक्यबोध, घ) खेत

3. ख) > क) > ग) > 'घ)

4. एक शब्द के स्थान पर ओही अर्थ के भा ओकरा निकट अर्थ के दोसर शब्द राखल 'शब्द के समतुल्यता के सिद्धांत' कहाला। एकरा खातिर मूल भाषा में प्रयुक्त शब्दन के समान अर्थ रखेवाला शब्दन के लक्ष्य भाषा में खोजल जाला।

5. श्लिष्ट शब्द के माने अनेकार्थक शब्द होला। मतलब ई कि श्लिष्ट शब्दन में कई संदर्भ के अनुसार कई गो अर्थ होला।

अभ्यास

1. क) हमरा भोरे जाये के बा।

ख) रउआ कहवाँ रहिलां?

ग) ऊ घरे जात बाड़ी।

घ) बिहार में मैथिली बोलल जाले।

2. क) ऊ पढ़त बाड़न।

ख) रउआ कइसन बानी?

ग) राउर का नाम ह?

घ) ऊ जात बाड़ी।

3. क) यह अनुवाद अच्छा है।

ख) आप कहाँ जा रहे हैं?

ग) कहाँ जाओगी?

घ) खाकर हाथ–मुँह धोया जाएगा।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY